सामाजिक मनोविज्ञान

परिभाषा एवं प्रकृति

मनोविज्ञान जहाँ व्यक्ति के सामान्य व्यवहारों का अध्ययन करता है वहीं सामाजिक मनोविज्ञान में व्यक्ति और समाज दोनों का ही अध्ययन किया जाता है। सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्ति एवं व्यक्ति तथा व्यक्ति एवं समूह की पारस्परिक अन्तः क्रियाओं और इनके परिणामों का अध्ययन है। अतः इस विज्ञान में समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान दोनों की ही विशेषताओं का समावेश है।

वास्तव में सामाजिक मनोविज्ञान समाज में व्यक्ति के व्यवहार के प्रत्येक पक्ष का अध्ययन करता है जो सामान्य मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र की अध्ययन परिधि में नहीं आते। सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति सामाजिक भी है और मनोवैज्ञानिक भी। यह व्यक्ति को एक मनोसामाजिक अथवा मनः सामाजिक प्राणी मानकर उसके व्यवहारों का अध्ययन सामाजिक परिस्थिति एवं सामाजिक मानसिक कारकों के अन्तः क्रियात्मक सम्बन्धों के सन्दर्भ में करता है।

सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति को विद्वानों ने अनेक परिभाषाओं के द्वारा स्पष्ट किया है:—

⇒ **शैरिफ तथा शैरिफ →** सामाजिक मनोविज्ञान प्रेरक सामाजिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में व्यक्ति के अनुभव तथा व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है।

इस परिभाषा में सामाजिक रूप से प्रेरित करने वाली परिस्थितियों से तात्पर्य उन व्यक्तियों और समूहों से है जो एक विशेष सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण का अंग होते हैं। इस प्रकार व्यक्ति का प्रत्येक व्यवहार किसी न किसी प्रेरक सामाजिक परिस्थिति का ही परिणाम होता है तथा सामाजिक मनोविज्ञान इन्हीं व्यवहारों का अध्ययन करता है।

⇒ **किम्बाल यंग →** सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों की अन्तः क्रियाओं का अध्ययन करता है तथा यह स्पष्ट करने का प्रयत्न करता है कि यह अन्तः क्रियाएँ व्यक्ति के विचारों भावनाओं, संवेगों और आदतों को

प्रभावित करता है।

किसप्रकार व्यापक अर्थ में यह कहा जा सकता है कि

⇒ कुप्पूस्वामी → सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों की पारस्परिक निर्भरता, अन्त: क्रियाओं और उनके पारस्परिक प्रभाव का वैज्ञानिक अध्ययन है।

इन सभी परिभाषाओं के द्वारा व्यक्ति के सामाजिक व्यवहारों को ही सामाजिक मनोविज्ञान की वास्तविक अध्ययन वस्तु के रूप में स्वीकार किया गया है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे के सम्पर्क में रहता है। अन्त: क्रियाएँ करता है। उनसे स्वयं प्रभावित होता है और दूसरों को भी प्रभावित करता है। इस प्रकार सामाजिक मनोविज्ञान को ज्ञान की एक ऐसी शाखा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें समाज के सन्दर्भ में व्यक्ति के व्यवहारों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

⇒ सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक है:-

मानव व्यवहार के सामाजिक पक्षों का वैज्ञानिक पद्धति द्वारा अध्ययन करना सामाजिक मनोविज्ञान की एक प्रमुख विशेषता है। इन वैज्ञानिक पद्धतियों में आज सर्वाधिक महत्व प्रयोगात्मक विधि को दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, अवलोकन विधि, समाजमिति विधि, सर्वेक्षण विधि तथा अन्तर्वस्तु विश्लेषण आदि वे प्रमुख विधियाँ हैं जिनके प्रयोग से सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिकता के बहुत निकट आ जाती है। इन वैज्ञानिक पद्धतियों द्वारा जो निष्कर्ष प्राप्त होते हैं वे प्रामाणिक, सार्वभौमिक, वस्तुनिष्ठ तथा भविष्यवाणी करने में सक्षम होते हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि सामाजिक मनोविज्ञान एक विज्ञान है तथा इसकी प्रकृति वैज्ञानिक है।

कुछ विद्वानों ने सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति को एक विशुद्ध मनोविज्ञान तथा व्यावहारिक मनोविज्ञान के सन्दर्भ में स्पष्ट किया है। जो विद्वान सामाजिक मनोविज्ञान को एक विशुद्ध मनोविज्ञान की श्रेणी में रखते हैं, उनका मानना है कि विशुद्ध अथवा मौलिक विज्ञान के लिए जो शर्तें अथवा मान्यताएँ आवश्यक हैं, वे सभी सामाजिक मनोविज्ञान में पायी जाती हैं। उदाहरण के लिए सामाजिक मनोविज्ञान में परिकल्पनाओं की जाँच की जाती है, प्रयोगशाला पद्धति, क्षेत्र प्रयोगों तथा क्षेत्र अध्ययन पद्धति के द्वारा किसी भी विषय का व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है तथा ऐसे अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के द्वारा सिद्धान्तों का निर्माण किया जाता है। इस प्रकार बनने वाले सिद्धान्तों का जब प्रमाणीकरण हो जाता है तभी उनके आधार पर नियमों का निर्माण किया जाता है। यदि इस दृष्टिकोण से देखा जाय तो सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति को विशुद्ध मनोविज्ञान के समकक्ष माना जा सकता है।

सामाजिक मनोविज्ञान को व्यावहारिक मनोविज्ञान की श्रेणी में रखने वाले विद्वानों का विचार है कि विशुद्ध मनोविज्ञान के साथ-साथ सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति व्यावहारिक भी है। कोई विज्ञान व्यावहारिक तब होता है जब वह अपने क्षेत्र से सम्बन्धित समस्याओं का व्यावहारिक रूप से समाधान करने का प्रयत्न करता है। सामाजिक मनोविज्ञान की विशेषता यह है कि यह विशुद्ध मनोविज्ञान द्वारा प्रस्तुत सिद्धान्तों एवं नियमों की सहायता से ऐसी अनेक व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करने में रुचि लेता है जो मानव व्यवहार के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित होती है। इसीलिए मर्टन तथा निस्बेत ने कहा है कि सामाजिक मनोविज्ञान का एक प्रमुख दायित्व विभिन्न समस्याओं का व्यावहारिक समाधान करना भी है। जाति-भेद, साम्प्रदायिक दंगे, अपराधी व्यवहार तथा औद्योगिक संघर्ष आदि इसी प्रकार की समस्याएँ हैं जिनका समाधान खोजने में समाज-मनोवैज्ञानिक प्रयत्नशील रहते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि मनोविज्ञान की अन्य शाखाओं की तुलना में सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति इसलिए अनुपम है क्योंकि

इसमें विशुद्ध मनोविज्ञान तथा व्यावहारिक मनोविज्ञान दोनों के ही गुणों का समावेश है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि मनोविज्ञान की अन्य शाखाएँ न तो विशुद्ध मनोविज्ञान की श्रेणी में आती हैं और न ही व्यावहारिक मनोविज्ञान की श्रेणी में।

सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति के निर्धारण का एक अन्य आधार मानव व्यवहार का विश्लेषण है इसी के द्वारा व्यक्तियों के व्यवहारों को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों को ज्ञात करके पारस्परिक क्रिया में भाग लेने वाले व्यक्तियों के व्यवहारों की भविष्यवाणी करना सम्भव हो पाता है। इस प्रकार की भविष्यवाणी विज्ञान की एक आवश्यक शर्त है जिसका स्पष्ट रूप सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत मानव व्यवहारों से सम्बन्धित भविष्यवाणी के रूप में देखने को मिलता है। सेकार्ड तथा बेकमैन ने पारस्परिक क्रिया में भाग लेने वाले व्यक्तियों के व्यवहारों की प्रकृति को निर्धारित करने के लिए तीन व्यवस्थाओं का विश्ल विश्लेषण किया है - (i) व्यक्तित्व व्यवस्था (ii) सामाजिक व्यवस्था (iii) सांस्कृतिक व्यवस्था।

इन तीनों व्यवस्थाओं में से मनोविज्ञान मूलतः व्यक्तित्व व्यवस्था का विश्लेषण करता है, समाजशास्त्र सामाजिक व्यवस्था के अध्ययन में रुचि लेता है जबकि सांस्कृतिक व्यवस्था का विश्लेषण करना मूलरूप से मानवशास्त्र का कार्य है। सामाजिक मनोविज्ञान की विशेषता यह है कि यह इन तीनों व्यवस्थाओं का विश्लेषण करके मानव व्यवहारों का अध्ययन करता है। इस प्रकार सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति को अनेक दूसरे विज्ञानों की तुलना में अधिक वैज्ञानिक माना जा सकता है।

(i) सामाजिक मनोविज्ञान वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है:-

(ii) सामाजिक मनोविज्ञान क्या है,

का विवेचन करता है →

(iii) सामाजिक मनोविज्ञान कार्य - कारण के सम्बन्धों की विवेचना करता है →

(iv) सिद्धान्तों की सार्वभौमिकता →

(v) सिद्धान्तों की पुनर्परीक्षा →

(vi) भविष्यवाणी करने की क्षमता →

सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति से सम्बन्धित इन सभी विशेषताओं से स्पष्ट होता है कि इसकी प्रकृति पूर्णतया वैज्ञानिक है। इसके पश्चात भी सामाजिक मनोविज्ञान की प्रकृति प्राकृतिक विज्ञानों से कुछ इसलिए भिन्न है कि इसके अन्तर्गत मानव व्यवहारों का अध्ययन होता है जो सदैव परिवर्तनशील और जटिल होते हैं।